

## सशक्त महिला, सम्पूर्ण महिला, नारीत्व का दर्पण

समाज में सभी उन्नति की तरफ तो बढ़ रहे हैं, लेकिन एक उन्नति ऐसी होती है, जो सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। जिसमें व्यक्ति सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक और भवनात्मक रूप से परिपूर्ण और सशक्त हो। उस व्यक्ति को कोई क्यों नहीं देखना चाहेगा! बात चल रही है यहाँ पर महिला उत्थान की, तो यदि पूरे विश्व को एक सिंहावलोकन की दृष्टि से देखें तो हमारी नज़र एक अति सशक्त, अध्यात्म की पुरोधा और अपने जीवन से अनेकों का जीवन बदलकर उन्हें ट्रस्टीशिप सिखाने वाली, अति शक्तिशाली महिला का नाम है दादी जानकी। इनका जीवन उन सभी पहलुओं का एक आईना है जिसकी चर्चा पूरा विश्व करता है। ये हर तरह से सशक्त हैं, चाहे शारीरिक रूप से, चाहे मानसिक या आध्यात्मिक। प्रेरणा स्रोत के रूप में आज हम देखते हैं कि एक आम व्यक्ति अगर 102 साल का हो, तो उसका या तो पैर नहीं चलता, या हाथ नहीं चलता या मुख नहीं चलता, कुछ न कुछ



- ब्र. कु. गंगाधर

विकृति ज़रूर होती है, और ब्रेन तो बिल्कुल ही नहीं चलता। लेकिन ये आध्यात्मिक शक्ति का कमाल है कि दादी जानकी का ब्रेन और उनका मन दोनों बहुत बहुत शक्तिशाली हैं, इसीलिए लोग उनकी बुद्धि का लोहा भी मानते हैं। हो भी क्यों ना! वैज्ञानिक परीक्षण में दादी जी को 'स्थितप्रज्ञ महिला' की उपाधि से नवाज़ा गया है। इसीलिए दादी जी में वो खूबियाँ हैं, कि जो बात बड़े बड़े वैज्ञानिकों को समझ नहीं आती, हमारी दादी जानकी उस चीज़ का चुटकियों में समाधान देती हैं। तो इसमें कौन सी शक्ति काम कर रही है जिसके आधार से ये इतनी सशक्त हैं? उस परम शक्ति से जुड़ाव ही दादी को मानसिक रूप से इतना सशक्त बनाता है, और आज सभी नारी शक्ति से हम ये अपील करना चाहेंगे कि आप भी अगर मानसिक धरातल पर सशक्त होना चाहती हैं, भावनात्मक रूप से मन को मज़बूत बनाना चाहती हैं, तो सिंहवाहिनी, मुक्तिदायिनी हमारी दादी से प्रेरणा लेकर, उसके दिलाराम से सम्पर्क स्थापित ज़रूर करें। तो चहुँमुखी विकास होगा ही होगा, ये हमारी अपरिहार्य मान्यता है। महिला देश की नींव है, और इस नींव को सशक्त बनाती है सिर्फ भावनात्मक रूप से मज़बूती। पूरा विश्व इस तरफ नज़र गराये हुए है कि ऐसा क्या है इनके अंदर। तो आप भी इधर देखो ना एक बार। दादी को जब भी कोई मिलता, तो वो हमेशा कहतीं कि मैं निर्भय हूँ और कल्याणार्थ मेरा जीवन समर्पित है। बस करनकरावनहार परमशक्ति के साथ जीना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मैंने तो सिर्फ भगवान से मोहब्बत की, और मेहनत को दरकिनार कर दिया। मैंने तो सिर्फ परमशक्ति के साथ एकाकार होकर बस जिया। मैं जीवन में सदा हल्की रहती हूँ और मेरे जीवन से लोग भी हल्के हो जाते हैं, तो मुझे संतोष होता है कि मैं भगवान की आशाओं पर खरी उतरी हूँ। इसका जीता जागता उदाहरण है... आज ब्रह्माकुमारीज़ में हज़ारों सशक्त होती महिलाएं। कहते हैं, महान वो है जो किसी को महान बनाकर दिखाये। ठीक वैसे ही विश्व व्यापी संगठन जो 147 देशों में फैला है, उसका संचालन आज 102 वर्ष की आयु में भी सफल और सुचारू रूप से हो रहा है। कहते हैं, महिला घर की प्रथम गुरु और परिवार की धुरी है। परिवार से समाज और समाज से विश्व। तो भला हम ये परिवर्तन की मिसाल देकर अपने में भी हिम्मत जुटायें ना। और हम भी जीवन को जीयें ना कि काटें। तो ये परिवर्तन करने की हिम्मत हम भी जुटायें, और स्वयं में व्याप्त बुराइयों को हमेशा हमेशा के लिए समाप्त करें ताकि विश्व के लिए हम मिसाल बन जायें। आप भी तो इससे सहमत हैं ना, कि आज के परिदृश्य में कितना ही दुःख, कितनी ही परेशानियाँ, कितनी ही मुश्किलातों से हमारा जीवन गुज़र रहा है। तो आइये, हम भी दादी के नज़रिये से अपने आपको देखें, और उसपर अपना जीवन खरा उतारने के लिए तैयार हो जायें।

## खबरदार...! कहीं सुस्ती हमारी नेचर न बन जाये

हमें परमात्म याद भूलती क्यों है? आत्मा परमात्मा का ज्ञान भी मिला, लेकिन भूलते क्यों हैं? कारण है नीति मर्यादा। पुरुषोत्तम बनने में मदद करते हैं- गुण और बाबा से पाई हुई शक्ति। फिर उसमें लगता है कि ये बाबा की सिखाई हुई, मिली हुई श्रीमत्त है। इसपर चलने में मज़ा आता है, सेफ्टी है। हर कर्म में बाबा की शिक्षाएं याद हैं। अच्छा स्टूडेंट जो होता है उसको जो शिक्षायें टीचर से मिली हुई होती हैं, वह काम में आती हैं। शिक्षायें याद करनी पड़ती हैं या काम में आती हैं?

रात में सोते हो तो बीच में जागना भी अच्छा है। बीच में बाबा की याद आती है। जैसे 8 घण्टा कर्म करो और बीच-बीच में बाबा की याद करो। कितना भी बिज़ी रहो लेकिन दिखाई ना पड़े। बाबा ने साकार में रहकर अव्यक्त होना सिखाया है।

ऐसे इस साल में हम यह अन्दर से गहरी लगन रखें। कोई हमको कहे कि आप बिज़ी हो, यह हमको अच्छा नहीं लगता। कोई यह भी न कहे कि सुस्त हैं। बाबा हमको भाग्य बनाने का चांस दे रहा है। न कभी बिज़ी दिखाई पड़ें, न कभी लेज़ी दिखाई पड़ें। कुछ धारणाएं अव्यक्त वर्ष में मज़बूत रखनी हैं। सुस्ती छठा विकार, सबसे बड़ा विकार है। सुस्ती बहाना बनाने में बड़ा हॉशियार है। सुस्ती बहाना बनाना सिखाती है, झूठ सिखाती है। बीती को चेतो नहीं, आगे बढ़ जाओ।

सुस्ती ठण्डा ठाकुर बनाती है, मोटा महादेव बना देती है। यह हमारी नेचर न बन जाए, बड़ा खबरदार और बीच-बीच में बाबा की याद करो। कितना भी बिज़ी रहो लेकिन दिखाई ना पड़े। बाबा ने साकार में रहकर अव्यक्त होना सिखाया है।

है। किसी कारण से भी, किसके भाव स्वभाव को देखा, किसने कुछ कहा, फीलिंग आ गई तो सुस्ती आ गई। जैसे शरीर कमज़ोर होता है तो बीमारी आ जाती है। वैसे सुस्ती को भी कुछ कारण चाहिए। कुछ निमित्त कारण बना तो बैठ जाएगी। फिर पुरुषार्थ में हिम्मत उमंग उल्लास खत्म हो जाता है। फिर मंथन नहीं चलेगा। सुस्ती विचार सागर मंथन करने नहीं



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

देगी। लगेगा सब तो सुना हुआ है। किसी को सुनाना हो या न सुनाना हो, लेकिन मंथन तो चलता रहना चाहिये। ज्ञान मंथन नहीं करेंगे, उसी चिन्तन में नहीं रहेंगे तो फ्रेश नहीं रहेंगे, इतना खुश मिज़ाज़ नहीं बनेंगे। अपने आपको हर्षित

रखकर दूसरों को हर्षित रखने की मदद नहीं कर सकेंगे, बस काम चलाऊ गाड़ी चलेगी। हर्षित रहने का वातावरण तो बना सकें, हर्षित रहने की कम्पनी मिले, गपशप की कम्पनी नहीं, यह नुकसान दायक है। ज्ञान से हर्षित रहने की कम्पनी मिलेगी। जो ज्ञान का सदा मनन-चिन्तन करता है, उसी से ही हर्षित रहने की कम्पनी मिलेगी। जो मोटी बुद्धि वाले हैं, वो कहेंगे कोई नई प्वाइंट तो मुरली में थी नहीं। ये है सुस्ती। यदि दिल से मुरली पढ़ो तो नई-नई प्वाइंट मिलेगी। जो मंथन करना नहीं जानता, चिन्तन करना नहीं जानता, उसको पता नहीं मुरली में कितना रस, कितनी शक्ति भरी है। वह अपने साथियों में वह शक्ति नहीं भर सकता। उड़ने नहीं देगा। ज्ञान का कायदा ही ऐसा है। बाबा ने गुप्त अपनी भावना, स्नेह की शक्ति से पढ़ाया है, पालना दी है।

## शंकाओं को डिक्शनरी से निकाल दो

परमात्मा ने हम लोगों को विशेषता है, उसको अगर यह योग भट्टी का गोल्डन हम अपनी समझ लेते हैं तो चांस दिया है, इसमें सभी ने परिवर्तन का निश्चय तो किया ही है। इस संगठन में सभी का उमंग देख परमात्मा भी बहुत खुश होंगे और ज़रूर विजय की मालायें पहनायेंगे। लेकिन होता क्या है- हम बहुत अच्छे-अच्छे संकल्प तो करते हैं, परन्तु उसको निभाने में थोड़ा फर्क पड़ जाता है। बाबा के प्यार का सब दिल से रिटर्न देने की प्रतिज्ञा तो करते हैं क्योंकि रिटर्न नहीं देंगे तो बाबा के साथ रिटर्न कैसे चलेगें? हमारी रिटर्न जर्नी भी तो है ना।

तो रिटर्न जर्नी के लिए पहले बापदादा ने जो प्यार दिया है, उसका रिटर्न करना है। रिटर्न में बापदादा क्या चाहता है? जो निमित्त हैं, वो सोचें कि हम वर्ल्ड की स्टेज के हीरो एक्टर हैं। बाबा ने कुछ तो विशेषता देखी है ना! ऐसे ही थोड़े ही निमित्त बना दिया। लेकिन वो विशेषता हम कहाँ तक कायम, अविनाशी रखते हैं, वो हमारे ऊपर है। यह विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं, इससे हम निमित्त बनने के साथ निर्माण व निरहंकारी भी बन जायेंगे क्योंकि कोई भी



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

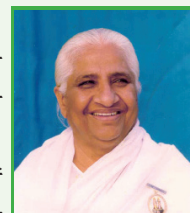
विशेषता है, उसको अगर हम अपनी समझ लेते हैं तो बहुत नुकसान है। मेरी तो है ही नहीं, क्योंकि मरजीवे जीवन में जन्म लेते ही बाबा ने हमको वरदान में विशेषता दी है। तो उस हिसाब से हम विशेषता को यूज़ करें और सदा निमित्त भाव याद रखें। दो बोल अपनी डिक्शनरी से तो क्या, पर सोच से, वृत्ति से भी निकाल दो कि क्या होगा? कैसे होगा? क्योंकि इससे उदासी आती है। भगवान के बच्चे और ऐसे सोच में चले जाने से न कभी स्वमान में रहेंगे, और बाबा से जो मिला है, वह हमारी जीवन में दिखाई भी नहीं देगा। दूसरे को भी प्राप्ति नहीं होगी। अकेले हैं या सबके बीच में हैं लेकिन हमें तो सारा जहान देख रहा है। एक तरफ बाबा देख रहा है, दूसरा परिवार देख रहा है तो सोचो हमें स्वयं को कैसे देखना चाहिए? कई ऐसी अच्छी-अच्छी, ऊंची-ऊंची बातें जो हैं वो स्मृति में रखने से अपने ऊपर अटेन्शन रहता है और वही सिमरण करने से स्व सहित सर्व को प्राप्ति होती रहेगी। हम आत्मा भी निमित्त हैं परमात्मा से मिलाने के लिए, ऐसी सोच हो तो और किसी प्रकार का रिंचक मात्र भी हमारे अंदर संकल्प आ नहीं सकता है।

## हम शीतल योगी हैं... ना कि गर्म योगी

हमारा प्यारा बाबा प्यार का सागर है, हम उनके अति प्यारे बच्चे हैं। प्यार के सागर ने हमें अनेक वरदान दे दिए हैं तो मुझे देखना है कि मैंने कितने वरदान प्राप्त किये हैं? हमें पहला वरदान दिया है कि तुम मेरे पुराने भक्त हो। तुम ही विश्व महाराजन्-महारानी थे, अब फिर से बनो। इस वरदान में सब कुछ आ जाता है। राज्य भाग्य राज तिलक सब कुछ आ जाता है। कई कहते हैं, मुझे जो खुशी होनी चाहिए वो नहीं है। मैं उनसे पूछती हूँ, बाबा मिला सब कुछ मिला, बाबा मिला राज्य भाग्य मिला, बाबा से सर्व वरदान मिले, फिर हमें कौन-सी ऐसी वस्तु चाहिए जिसके कारण खुशी नहीं होती? फिर कई कहते हैं, गम भी नहीं है, खुशी भी नहीं है। तो ज़रूर बीच में कोई चोर है इसलिए खुशी नहीं है। हमारा आधार है बाबा, हमने 'बाबा' अक्षर ही पढ़ा है, इसी बिन्दु में सब कुछ आ जाता है, फिर मुझे खुशी क्यों नहीं? खुशी न होने के कुछ कारण हैं:-

\* या तो मन्सा की वृत्तियाँ खराब हैं, \* पुराने संस्कारों पर विजय नहीं है, \* अपने आपको शक्तिशाली, शिवशक्ति नहीं समझते इसलिए सोचते हैं कि हम इतनी बड़ी मंज़िल पर कैसे चढ़ें? जहाँ हिम्मत है वहाँ उल्लास है और जहाँ हिम्मत उल्लास है, वहाँ खुशी है। हम शीतल योगी बाबा के बच्चे हैं। हम गर्म योगी नहीं हैं। कई हैं जो कर्मयोगी के बदले गर्मयोगी बन जाते हैं। जो गर्म होता है वह खुद तो जलता है, दूसरों को भी जलाता है। उससे सेक आएगा तो दर्द होगा। कई कहते हैं- बाबा, मेरे तो आप, दूसरा न कोई,

परन्तु थोड़ा गुस्सा आ जाता है। क्या बाबा ने इसकी छुट्टी दी है? जब गर्म होते तब निन्दा कराने के निमित्त बनते। कहते हैं- मैं हूँ तो मास्टर सर्वशक्तिमान्, लेकिन मैं अपने को शीतल नहीं कर सकता। गर्म होने की शक्ति यूज़ करते हैं। शीतल नहीं बन सकते। कहेंगे गर्म होने के बिगर काम नहीं चल सकता। इसी को शायद शक्ति समझते हैं। कमरे में रखा है शिवबाबा का चित्र और करते हैं आपस में झगड़ा। रूठ जाते हैं। होगा दिल में दर्द, कहेंगे पेट में दर्द है, सिर में दर्द है। देखने वाले देखते, डिंस सर्विस के निमित्त बन जाते हैं। क्या ऐसे को हम सन शोज़ फादर, मास्टर सर्वशक्तिमान् या राजयोगी कहेंगे? हम गर्म योगी नहीं परन्तु शीतल योगी हैं। योगी की काया, दृष्टि, वृत्ति सब शीतल होगी। शीतलता ही हमारे जीवन का मीठा वरदान है। बच्चों को कंट्रोल करना यह हमारा फर्ज है, लेकिन ताम्बे की तरह लाल-पीला होना यह हमारा फर्ज नहीं है। न परेशान होना है, न



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

करना है- यह पक्का कर लो। कई हैं जो मुँह से कड़वे बोल भी निकालते हैं, गाली भी देते हैं। दूसरों को गाली देने के पहले 100 गाली अपने को दो तो पता पड़े कि कैसे नस-नस में दर्द पड़ता है। उस टाइम अपने को देखो, मेरे को अगर कोई गाली दे तो कितना दर्द होगा? अगर मुझपर कोई गुस्सा करे, बुरा बोले तो कितना दर्द होगा? अगर मुझे दर्द होता है तो उसे भी कितना होगा? हम सबके दुःख दर्द मिटाने वाले हैं, अगर हम ही दुःख देंगे तो अपने को श्रापित कर रहे हैं। दर्द देना माना बददुआ लेना।